IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

आईसीटी-आधारित संसाधनों और कौशल विकास के साथ पुस्तकालय सूचना प्रणाली का विकास: एक समीक्षा

Name - Rakeeb Ahmad, Supervisor Name - Dr.Dinanath Pawar

Library and Information Science, Institute Name - Malwanchal University, Indore

संक्षेप

आधुनिक पुस्तकालय सूचना प्रणाली में आईसीटी-आधारित संसाधनों और कौशल विकास का समन्वय, उन्हें बेहतर उपयोग और पहुँच के लिए मजबूत बनाता है। यह दृष्टिकोण डिजिटल साधनों और मंचों का सम्मिलन करता है ताकि पुस्तकालय संसाधनों की पहुँच और प्रयोगिता में सुधार किया जा सके। आईसीटी शामिल करने से पुस्तकालय संसाधनों के संचालन प्रक्रियाओं को सम्मिलित करने में मदद मिलती है, इंटरैक्टिव इंटरफेस के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को बेहतर जोड़ने के लिए तथा डिजिटल साक्षरता और अनुसंधान तकनीकों में प्रशिक्षण प्रदान करके प्रयोक्ता विकास को बढ़ावा देने के लिए सक्षम होती है। यह समग्र दृष्टिकोण न केवल पुस्तकालय सेवाओं को आधुनिक बनाता है, बल्कि जीवनभर अध्ययन की पहल को समर्थन देता है, जिससे प्रयोगकर्ताओं को आज की ज्ञान-आधारित समाज में डिजिटल संसाधनों को प्रभावी ढंग से संपर्क करने और उपयोग करने में सहायता मिलती है।

परिचय

आधुनिक पुस्तकालय सूचना प्रणाली में आईसीटी-आधारित संसाधनों और कौशल विकास का समन्वय एक व्यापक और महत्वपूर्ण विषय है जो आधुनिक शिक्षा और अनुसंधान में महत्वपूर्ण योगदान करता है। इस समीक्षा का उद्देश्य यहां तक है कि विभिन्न आईसीटी उपकरणों और प्रौद्योगिकियों का पुस्तकालय सूचना प्रणाली में उपयोग कैसे बदल रहा है और उपयोगकर्ताओं के संवादनशीलता और पहुँच को कैसे सुधार रहा है।

आईसीटी के संचालन में यह उत्कृष्टता और प्रदर्शन को सुनिश्चित करने के लिए पुस्तकालयों को सक्रियता और संवेदनशीलता का माध्यम बनाता है। वर्चुअल रिऐलिटी (VR) और ऑगमेंटेड रिऐलिटी (AR) जैसी प्रौद्योगिकियां उपयोगकर्ताओं को डिजिटल पुस्तकालयों में आदिम करती हैं, जहां वे वास्तविकता से परे अनुभव कर सकते हैं और डिजिटल संसाधनों के साथ अंतर्क्रियात्मकता का आनंद ले सकते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) उपकरणों के माध्यम से व्यक्तिगत सम्बोधन, उपयुक्त सुझाव और जवाबदेह चैटबॉट्स के द्वारा उपयोगकर्ता समर्थन प्रदान करने में सहायक होती है, जो अनुसंधान प्रक्रियाओं को सुगम और उपयुक्त बनाती है। मोबाइल ऐप्स और प्रतिक्रियाशील वेब डिजाइन ने इसके साथ ही उपयोगकर्ताओं को विभिन्न उपकरणों पर संबंधित डिजिटल संसाधनों का उपयोग करने की सुविधा प्रदान की है, जिससे उन्हें शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में उनकी सुविधा के अनुसार सुविधा होती है। सामाजिक मीडिया के संघटन से उपयोगकर्ताओं के बीच ज्ञान साझा करने की सुविधा भी मिलती है, जो पुस्तकालय को एक सक्रिय और समर्थनशील संसाधन केंद्र बनाता है। आईसीटी-आधारित संसाधनों और कौशल विकास के साथ पुस्तकालय सूचना प्रणाली का विकास न केवल पुस्तकालय सेवाओं को आधुनिक बनाता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि डिजिटल युग

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

में शिक्षा और अनुसंधान की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपयोगकर्ताओं को सक्षम और प्रभावी बनाया जा सके।

पुस्तकालयों में आईसीटी के घटक

पुस्तकालयों में आईसीटी के घटक अब एक महत्वपूर्ण और अभिनव हिस्सा बन गए हैं। इन घटकों के उपयोग से पुस्तकालय सेवाओं को और भी प्रभावी और सुविधाजनक बनाने में मदद मिलती है।

1. **संग्रह प्रबंधन सॉफ़्टवेयर**: ये सॉफ़्टवेयर पुस्तकालय संग्रह की प्रबंधन, संग्रहन, और पहुंच को संगठित करने में मदद करते हैं। इनमें संग्रह सूचीकरण, डिजिटल संग्रह के विकास और प्रबंधन, और आँकड़े और रिपोर्टिंग शामिल होते हैं।
2. **आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर**: आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर में संग्रह सर्वर, कंप्यूटर, नेटवर्क इंफ्रास्ट्रक्चर, और इंटरनेट कनेक्टिविटी शामिल होती है। ये घटक पुस्तकालय की सामग्री को संचालित करने और उपयोगकर्ताओं को सेवाएं प्रदान करने में महत्वपूर्ण होते हैं।
3. **डिजिटल संग्रह और प्रक्रिया**: इसमें डिजिटल संग्रह तकनीक, ऑनलाइन विश्वकोश, डिजिटल पुस्तकालय सॉफ़्टवेयर, और डिजिटल संग्रहों की निर्माण और प्रबंधन की प्रक्रिया शामिल होती है।
4. **ऑनलाइन संदर्भ सेवाएं**: ये सेवाएं उपयोगकर्ताओं को डिजिटल पुस्तकों, जर्नलों, और अन्य संसाधनों का पहुंच प्रदान करती हैं। उन्हें आईसीटी इंफ्रास्ट्रक्चर के माध्यम से संचालित किया जाता है।
5. **वेब पोर्टल और उपयोगकर्ता अनुभव**: पुस्तकालय वेबसाइट और पोर्टल उपयोगकर्ताओं को संग्रह संदर्भ, ऑनलाइन सामग्री, और सेवाओं का अध्ययन करने की सुविधा प्रदान करते हैं।

ये घटक पुस्तकालयों को अधिक संगठित, प्रभावी, और उपयोगी बनाते हैं, जिससे उनकी सेवाओं का गुणवत्ता और पहुंच में सुधार होता है।

शोध का दायरा

शोध का दायरा पुस्तकालय सूचना प्रणाली के विकास में एक महत्वपूर्ण और आवश्यक अध्ययन का आधार होता है। इसका मुख्य उद्देश्य पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता, प्रभावीता, और प्रयोग की स्थिति को मापने और समझने में मदद करना है। शोध के द्वारा, हम पुस्तकालयों के संगठन, संसाधनों का प्रबंधन, और उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को समझ सकते हैं। यह एक संपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है जो पुस्तकालय सूचना प्रणाली के विकास में जरूरी होता है। इसके माध्यम से हम नई तकनीकी उपायों का अध्ययन कर सकते हैं, उपयोगकर्ता प्रतिक्रिया का मूल्यांकन कर सकते हैं, और उपयोगकर्ता-मुखी सेवाओं के लिए नए और सुविधाजनक उपाय विकसित कर सकते हैं। इस प्रकार, शोध का दायरा पुस्तकालय सूचना प्रणाली के सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण निर्देशक होता है।

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

साहित्य की समीक्षा

हुसैन और नाज़िम (2015) भारतीय शैक्षणिक पुस्तकालयों में विभिन्न आईसीटी एप्लिकेशन्स के उपयोग की संभावना पर एक अध्ययन प्रकाशित किया गया। डेटा को सर्वेक्षण विधि का उपयोग करके एकत्र किया गया था। एक व्यवस्थित प्रश्नावली को 30 पुस्तकालयिका संचालकों को भारत के केंद्रीय विश्वविद्यालय पुस्तकालयों से भेजा गया था। अध्ययन के अनुसार, भारतीय शैक्षणिक पुस्तकालयों में विभिन्न पुस्तकालय क्रियाओं और सेवाओं के प्रबंधन के लिए मुख्य रूप से पारंपरिक आईसीटी-आधारित समाधानों पर निर्भर किया जा रहा है। शैक्षणिक पुस्तकालयों में, वेब खोज उपकरण, ब्लॉग्स, विकिस, आरएसएस फीड्स, सोशल नेटवर्किंग, और सोशल बुकमार्किंग जैसे आधुनिक आईसीटी-आधारित जानकारी निर्माण और साझा करने के उपकरणों का उपयोग अद्भुत दिखता है। शैक्षणिक पुस्तकालयों में आईसीटी एप्लिकेशन्स के प्रमुख बाधाएं आईसीटी वर्कर्स की कमी, पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं के आईसीटी कौशलों की कमी, आईसीटी के लाभों के अनजानपन, और अपर्याप्त आईसीटी बुनियादी संरचना में पायी गई थी।

शुक्ला (2015) उत्तर प्रदेश में विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों की वर्तमान स्थिति और स्थिति की जांच की गई, संग्रह, बजट, मानव साधन, इंफ्रास्ट्रक्चर, समस्याएं और चुनौतियों आदि के परिप्रेक्ष्य में। अध्ययन के उद्देश्य से विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों से डेटा एकत्र करने के लिए एक प्रश्नावली का उपयोग किया गया। अनुसंधान के अनुसार, यूपी के विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों में उपलब्ध आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर में एक महत्वपूर्ण अंतर प्रतीत होता है और पुस्तकालय उन्हें पर्याप्त उपकरणों की कमी से कुछ उत्पन्न होते हैं और पुस्तकालय नेटवर्क्स जैसे सहयोगी परियोजनाओं में भाग नहीं लेते हैं।

जोशी (2015) एक अध्ययन में हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, पंजाब, और संघ शासित प्रदेश चंडीगढ़ के 12 विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों की समीक्षा की गई, खासकर आईसीटी एप्लिकेशन्स के संदर्भ में। यह अध्ययन विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों में वर्तमान स्थिति और सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग पैटर्न के बारे में है। बारह में से आठ पुस्तकालयों का विशेष नाम है, प्रश्नावली के जवाबों और विश्वविद्यालय वेबसाइटों पर उपलब्ध जानकारी के आधार पर। सभी पुस्तकालयों का इंटरनेट पर प्रतिष्ठान है, या तो विश्वविद्यालय वेबसाइट के माध्यम से (8 पुस्तकालय) या सीधे लिंकों के माध्यम से (4 पुस्तकालय)। विश्वविद्यालयों में या तो पूरा हो चुका है या वायरलेस इंटरनेट कनेक्टिविटी (6 पुस्तकालय) (5 पुस्तकालय) को समाप्त करने की प्रक्रिया में है। रिपोर्ट के अनुसार, प्रशासनिक लापरवाही के बावजूद, जिसके बारे में अनग्रेज़ी में भरे नहीं गए पदों की चिंता के बारे में यातायात, विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों ने आईसीटी इंफ्रास्ट्रक्चर और डिजिटल संसाधनों का अधिग्रहण किया है और आईसीटी-आधारित सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

मेरुगु और कुमार (2014) वारंगल क्षेत्र में शैक्षिक पुस्तकालयों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग की जांच की गई, जिसमें आईसीटी इंफ्रास्ट्रक्चर, पुस्तकालय स्वचालन, और उपयोगकर्ता संतुष्टि का अध्ययन किया गया। अध्ययन की तकनीक एक प्रश्नावली पर आधारित सर्वेक्षण उपकरण था। अनुसंधान के अनुसार, पुस्तकालयों में से आधे के आधे कॉलेजों के पुस्तकालयों में ई-जर्नल्स का पहुंच नहीं था। बड़ी संख्या में पुस्तकालय अब तक पूरी तरह से स्वचालित नहीं हो चुके हैं। बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए, पुस्तकालयों को संदर्भ सेवाओं, उपयोगकर्ता मित्रशील सेवाओं, और

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

ऑडियो/विज़ुअल सेवाओं को बढ़ाना होगा। वारंगल जिले के पुस्तकालयों में आईसीटी का कार्यान्वयन वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण अवरुद्ध हुआ है।

हनुमप्पा, डोरा और नाविक (2014) एक अध्ययन किया गया था जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीय पुस्तकालयों के संदर्भ में ओपन सोर्स सॉफ़्टवेयर (OSS) बाजार की जांच करना था, जिसमें मुख्य ध्यान केंद्रित पुस्तकालय स्वचालन, जैसे कि एकीकृत पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली (ILMS) और डिजिटल पुस्तकालय (DL) सॉफ़्टवेयर समाधान है। इस अध्ययन के लिए डेटा का संग्रह सर्वेक्षण विधि के माध्यम से किया गया था, जिसमें 356 पुस्तकालय पेशेवरों ने नमूना समूह का हिस्सा बनाया।

मधुसूदन और नागभूषणम (2012) भारत में विभिन्न विभागों के यूनिवर्सिटी पुस्तकालयों के उपयोगकर्ताओं द्वारा वेब-आधारित पुस्तकालय सेवाओं का उपयोग कैसे किया जाता है, इसकी जांच की गई, साथ ही कुछ यूनिवर्सिटी पुस्तकालय अपने संग्रहों के लिए वेब उपयोग और उस उपयोग के लिए उपयोगकर्ता समर्थन को कैसे प्रदान करते हैं, और जब उपयोगकर्ता वेब-आधारित पुस्तकालय सेवाओं का उपयोग करते हैं, तो उन्हें कौनसी समस्याएं का सामना करना पड़ता है, इस पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन के लिए एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया था जो 600 प्रतिस्पर्धियों को व्यक्तिगत रूप से बांटा गया था जिनमें से 20 यूनिवर्सिटी पुस्तकालयों के संग्रह का उपयोग किया गया था, और प्रतिस्पर्धियों का प्रतिशत 100% रहा। प्रतिस्पर्धियों का चयन एक स्तरीकृत अक्सीडेंटल रैंडम नमूना विधि का उपयोग करके किया गया था। अनुसंधान के अनुसार, अध्ययन किए गए कई यूनिवर्सिटी पुस्तकालय अभी तक ऑनलाइन फॉर्म की संभावना को पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं और पुस्तकालय वेबसाइट के प्रभावी उपयोग में पिछड़ रहे हैं। विभिन्न विभागों में, कुछ पुस्तकालय अनूठी वेब-आधारित पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करते हैं। रिपोर्ट ने मौजूदा वेब-आधारित पुस्तकालय सेवाओं की मौजूदा स्थिति का बयान किया, जिसके खिलाफ भारतीय यूनिवर्सिटी पुस्तकालयीयन अपनी वेब-आधारित पुस्तकालय सेवाओं की तुलना कर सकते हैं।

वाल्मिकी और गौड़ा (2009) कर्नाटक में यूनिवर्सिटी पुस्तकालयों का एक सर्वेक्षण किया गया और उनमें से छह में आईसीटी इंफ्रास्ट्रक्चर की वर्तमान स्थिति की रिपोर्ट की गई। यूनिवर्सिटी पुस्तकालयाध्यक्षों से एक मानकीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इस संग्रह में हार्डवेयर इंफ्रास्ट्रक्चर के बारे में जानकारी शामिल है, जैसे कि सर्वर, पीसी, लैपटॉप, प्रिंटर, स्कैनर, और अन्य उपकरणों की उपलब्धता। सर्वेक्षण में हाउसकीपिंग चोरों को स्वचालित करने के लिए सॉफ़्टवेयर के साथ-साथ डिजिटल पुस्तकालय गतिविधियों के लिए सॉफ़्टवेयर शामिल है। अध्ययन में सूचना स्रोतों तक पहुंच के लिए कैम्पस लैन और इंटरनेट सुविधाओं की उपलब्धता भी शामिल है। रिपोर्ट के अनुसार, अधिकांश पुस्तकालयों में पर्याप्त प्रौद्योगिकी और सॉफ़्टवेयर, साथ ही पर्याप्त इंटरनेट स्पीड की कमी है। डिजिटल सूचना वातावरण के लाभ का उपयोग करने के लिए, यूनिवर्सिटी पुस्तकालयों को आईसीटी इंफ्रास्ट्रक्चर का डिज़ाइन, कार्यान्वयन, और निर्माण करना होगा।

सलीह (2014) जाँच यूनिवर्सिटी पुस्तकालयों की कम्प्यूटरीकरण की की गई थी। मुख्य उद्देश्य यह था कि यूनिवर्सिटी पुस्तकालयों की विभिन्न पहलुओं में कंप्यूटरों का उपयोग का विश्लेषण और तुलना किया जाए, जैसे कि हाउसकीपिंग कार्यों, इंफ्रास्ट्रक्चर, वित्त, और पुस्तकालय सेवाओं में। इसके अलावा, अध्ययन ने कंप्यूटरीकरण के कार्यों में शामिल कर्मचारियों को पहचानने का प्रयास किया और उनके योग्यता और कार्यक्षमता स्तर का मूल्यांकन किया। अध्ययन में चार मुख्य यूनिवर्सिटी

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

पुस्तकालयों को शामिल किया गया: [स्थान का नाम] विश्वविद्यालय, एम.जी. विश्वविद्यालय, कोचीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, और कालिकट विश्वविद्यालय। डेटा संग्रह पुस्तकालय ग्रंथपालों, कंप्यूटरीकरण के जिम्मेदार व्यक्ति, और उपयोगकर्ताओं को भेजे गए सर्वेक्षणों के माध्यम से किया गया। साथ ही, यूनिवर्सिटी पुस्तकालयों की वेबसाइटों से जानकारी भी एकत्र की गई। रिपोर्ट ने बताया कि किसी भी यूनिवर्सिटी पुस्तकालय को पूरी तरह से डिजिटल नहीं किया गया था। हालांकि, जिसे भी अध्ययन किया गया, वे सभी INFLIBNET का समर्थन करते थे, उनके पास यूनिवर्सिटी लोकल एरिया नेटवर्क (LAN) था, और उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट उपयोग के लिए पहुंच प्रदान की गई थी। फिर भी, उपयोगकर्ताओं के बीच विभिन्न पुस्तकालय और सूचना सेवाओं के प्रति जागरूकता की कमी की गई। एक मुख्य सिफारिश में एक [स्थान का नाम] की यूनिवर्सिटियों के बीच संगठन बनाने का सुझाव दिया गया, जो कि यूनिवर्सिटी पुस्तकालयों के बीच संसाधनों का आपसी विनिमय सुविधा प्रदान करेगा।

पैट्रिक (2014) एक अध्ययन किया गया था जिसमें यूनिवर्सिटी ऑफ़ मलावी पुस्तकालय में कर्मचारी विकास और संबंधित मुद्दों का जांच किया गया। गुणात्मक और सांख्यिकीय डेटा प्राप्त करने के लिए, एक मामला अध्ययन डिज़ाइन का उपयोग किया गया था। यूनिवर्सिटी ऑफ़ मलावी की पुस्तकालयों में कॉलेज लाइब्रेरियन्स के साथ साक्षात्कार किए गए और यूनिवर्सिटी के बजट अनुमानों का विश्लेषण वित्तीय वर्षों तक किया गया। यूनिवर्सिटी ऑफ़ मलावी पुस्तकालयों में कर्मचारी विकास को प्रोफेशनल पात्रता की प्राथमिकता माना गया है, जैसा कि अध्ययन के अनुसार पाया गया। हालांकि, अधिकांश पुस्तकालय कर्मचारियों को वित्तीय प्रतिबंधों के कारण LIS पेशेवर पात्रता की कमी है। अध्ययन के अनुसार, पुस्तकालयों को निरंतर पेशेवर विकास (CPD) के लिए बजट बनाना चाहिए।

शुवा (2014) एक अध्ययन किया गया था जिसका उद्देश्य था बांग्लादेशी विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में डिजिटल पुस्तकालयों की वर्तमान स्थिति का निर्धारण करना और यह जानना कि बांग्लादेशी विश्वविद्यालय पुस्तकालय क्या तैयार हैं अपनी पारंपरिक पुस्तकालयों को डिजिटल पुस्तकालयों में बदलने के लिए। इस अध्ययन में बांग्लादेश के सार्वजनिक और निजी विश्वविद्यालय पुस्तकालय की मुख्य पुस्तकालय अध्यक्ष थे। इस अध्ययन में मिश्रित विधियों का अनुसंधान किया गया जिसमें क्वालिटेटिव और क्वांटिटेटिव डेटा शामिल था। डेटा को प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किया गया, जिसका प्रतिक्रिया दर 60% रही। सर्वेक्षण के अनुसार, बांग्लादेश में बहुमत विश्वविद्यालय पुस्तकालय डिजिटल उपकरणों से नहीं युक्त हैं। बांग्लादेशी विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में डिजिटल पुस्तकालयों के विकास के लिए मुख्य समस्याएं पैसे की कमी, अध्यात्मिक सहायता, और कुशल LIS विशेषज्ञों की कमी है।

असोगवा (2014) एक अध्ययन किया गया था जिसका उद्देश्य था नाइजीरियाई संस्थानों में पुस्तकालयों की प्रतिस्पर्धा का निर्धारण करना, साथ ही उनके प्रदर्शन की प्रतिबंधकताओं और इंफ्रास्ट्रक्चर और कौशलों को जानना। इस अध्ययन के प्रतिभागियों के रूप में नाइजीरिया के 89 विश्वविद्यालयों के सभी विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष थे, और प्रमुख डेटा संग्रह विधि एक प्रश्नावली थी। अध्ययन के अनुसार, नाइजीरिया में शैक्षिक पुस्तकालयों और पुस्तकालय अध्यक्षों की तीन मुख्य क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धात्मक थीं: शैक्षिक कार्य, पेशेवर विकास, और अनुसंधान। हालांकि, उनका प्रदर्शन ऑनलाइन पुस्तकालय संसाधनों का प्रदान और उपयोग, उचित वित्त, संग्रह विकास, और सूचना

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

प्रौद्योगिकी क्षमताओं के मामले में अप्रभावी था। गरीब इंटरनेट प्रवेश, पर्याप्त बैंडविड्थ की कमी, अप्रत्याशित बिजली की आपूर्ति, और इंटरनेट के विशेषज्ञों की कमी मुख्य बाधाएं थीं।

निष्कर्ष

आधुनिक पुस्तकालय सूचना प्रणाली में आईसीटी-आधारित संसाधनों और कौशल विकास के साथ विकास के विषय में यह समीक्षा महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। आईसीटी के उपयोग से पुस्तकालय सूचना प्रणाली में संवादनशीलता और पहुँच को सुधारा जा सकता है, जिससे उपयोगकर्ताओं को अधिक व्यापक और सुलभ सेवाएं प्राप्त करने में मदद मिलती है। इस समीक्षा ने दिखाया है कि वर्चुअल रिऐलिटी (VR), ऑगमेंटेड रिऐलिटी (AR), और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) जैसे नवाचारों का उपयोग पुस्तकालयों को उनकी सेवाओं में और भी सक्रिय और प्रभावी बना सकता है। आईसीटी-आधारित संसाधनों के साथ पुस्तकालय सूचना प्रणाली का विकास न केवल उपयोगकर्ताओं को डिजिटल संसाधनों के साथ अच्छी तरह से जोड़ने में मदद करता है, बल्कि यह उनके शैक्षिक और अनुसंधान के प्रयासों को भी समर्थन प्रदान करता है। इस समीक्षा ने दर्शाया है कि ये प्रौद्योगिकियां न केवल ज्ञान के स्रोत को विस्तारित करती हैं, बल्कि उपयोगकर्ताओं को भी उनके शैक्षिक और पेशेवर उद्देश्यों में सहायता प्रदान करती हैं। इस समीक्षा का महत्व यहां तक है कि यह प्रक्रियाओं को सुगम बनाने और प्रयोगकर्ता अनुभव में सुधार करने के लिए पुस्तकालयों को एक आधुनिक और प्रभावी संसाधन केंद्र बनाता है। इससे विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं, और शिक्षा प्रेमियों को संशोधित और सुविधाजनक शिक्षा प्राप्त करने में सहायता मिलती है, जिससे उनकी शैक्षिक यात्रा को मजबूती मिलती है और उन्हें विशेषज्ञता का विकास करने में सहायता मिलती है।

संदर्भ

1. चक्रवर्ती, आर., & चोपड़ा, क. (2018). भारत के आईआईटी (भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान) और आईआईएम (भारतीय प्रबंधन संस्थान) पुस्तकालयों में वेब 2.0 उपकरणों का अनुप्रयोग: एक अध्ययन। एसआरईएलएस सूचना प्रबंधन पत्रिका, 50(1), 35-40।
2. चंद्रशेखर, एम. (2018). पुस्तकालय और सूचना सेवाओं में वेब-आधारित प्रौद्योगिकी का उपयोग। आचिम ओसवाल्ड और एस.एम. जबेद अहमद (संपा.), ज्ञान समाज में पुस्तकालय विज्ञान की गतिशीलता: प्रो. बी. रमेश बाबू के सम्मान में समर्पित उपहार (पृ. 411-421, क्र. 1–4). नई : बी.आर. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।
3. चावला, डी. और सोंधी, एन. (2018). अनुसंधान मार्गदर्शिका: सिद्धांत और मामले। नोएडा: विकास प्रकाशन हाउस।
4. हान, यू. (2013). पुस्तकालयों के लिए IaaS बादल कंप्यूटिंग सेवाएँ: बादल संग्रह और वर्चुअल मशीन। OCLC Systems & Services, 29(2), 87-100.
5. हनीफा, के. एम. (2017). भारत में विशेष पुस्तकालयों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों का अनुप्रयोग। पुस्तकालय समीक्षा, 56(7), 603-20।
6. हनीफा, एम. के. (2017). विशेष पुस्तकालयों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों का अनुप्रयोग (डॉक्टरेट थीसिस)। पुस्तकालय और सूचना विज्ञान विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय, कालिकट।
7. हनीफा, एम. के., & शुक्कोर, सी. के. (2017). पुस्तकालय पेशेवरों के बीच सूचना और संचार प्रौद्योगिकी साक्षरता। डेसिडॉक जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी, 30(6), 55-63।

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

8. जीनू एस., & सिवांकुट्टी, वी. एस. (2016). नए प्रकार के पुस्तकालय कर्मचारियों के कौशल: भारत में पुस्तकालय और सूचना विज्ञान पेशेवरों के वेब 2.0 कौशलों का एक अन्वेषणात्मक सर्वेक्षण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनफॉर्मेशन डिसीमिनेशन एंड टेक्नोलॉजी, 1(4), 253-257।
9. जॉनस्टन, एन., & विलियम्स, आर. (2016). कटर राज्य में वर्तमान और भविष्य के पुस्तकालय पेशेवरों की कौशल और ज्ञान की आवश्यकता का मूल्यांकन। पुस्तकालय प्रबंधन, 36(1/2), 86-98।
10. जोशी, एम. के. (2016). उत्तर भारत के विश्वविद्यालय पुस्तकालय: वर्तमान स्थिति और सूचना प्रौद्योगिकी उपयोग के प्रवृत्तियाँ। डेसिडॉक जर्नल ऑफ़ लाइब्रेरी एंड इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, 35(4), 258-265।
11. जोशी, एन. एस., & प्रजापति, एस. के. (2016). शैक्षणिक पुस्तकालय और बादल कंप्यूटिंग। कैलिबर की 9वीं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की प्रक्रिया में (पृ.160-171). अहमदाबाद: इनफ्लिबनेट।
12. क्रूबू, डी. इ., & ओसावारु, के.ई. (2015). नाइजीरियन विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का प्रभाव। पुस्तकालय दर्शन और अभ्यास (ई-पत्रिका), पेपर 583।
13. कुमार, ए., & रंजन, एस. (2015). लखनऊ के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में सोशल मीडिया का उपयोग: एक सर्वेक्षण। खैसर मुनीबुल्लाह खान, टी.वाई. मल्लैयाह और बी.के. विशला (संपा.), सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों का उपयोग: सामाजिक जागरूकता के लिए पुस्तकालयों की भूमिका (पृ. 28-34)। मैंगलोर: मैंगलोर विश्वविद्यालय।
14. ली, सी. एस., & केलकर, आर. एस. (2015). आईसीटी और ज्ञान प्रबंधन: एसईसीआई मॉडल के दृष्टिकोण। इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकालय, 31(2), 226-243।
15. मेतिली, एल. (2014). तंजानिया एकेडमिक पुस्तकालयों को स्वचालित करने में चुनौतियाँ। 9वें अंतरराष्ट्रीय कैलिबर के प्रोसीडिंग्स (पृ. 18-22)। अहमदाबाद: इनफ्लिबनेट।
16. मोहना कुमार, टी. (2014). आईटी पर्यावरण में कॉलेज पुस्तकालय के पेशेवर पुस्तकालय मानव संसाधन विकास (डॉक्टरेट थीसिस)। पुस्तकालय और सूचना विज्ञान विभाग, यूनिवर्सिटी ऑफ़ , थिरुवनंतपुरम।
17. मुखर्जी, बी. (2014). सूचना संचार और समाज। नई : एस एस प्रकाशन।
18. मुखोपाध्याय, ए. (2014). संसाधन साझा पहल और सांस्कृतिक लग। आर.एल. रैना, डी.के. गुप्ता और आर.सी. गौर (संपा.), पुस्तकालय प्रबंधन: प्रवृत्तियाँ और अवसर (पृ.156-159)। : एक्सेल बुक्स।
19. ओकाई, एस. आदि। (2013). यूनिवर्सिटीज के लिए आईसीटी कुशलता बढ़ाने के लिए बादल कंप्यूटिंग अनुगमन मॉडल। सेज ओपन, 4(3), 1-10।
20. ओमोनियी, जे. ओ., & अकिंबोरो, ई. ओ. (2013). नाइजीरियाई विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में आईसीटी चुनौतियों के लिए पुस्तकालय शिक्षा और प्रैक्टिस का पुनर्निर्धारण। इनफार्मेशन टेक्नोलॉजिस्ट, 6(1)।
21. पंड्या, एम. (2013). पुस्तकालयों के लिए बादल कंप्यूटिंग: एक स्वॉट विश्लेषण। 8वें कन्वेंशन प्लैनर की प्रोसीडिंग्स (पृ.387-394)। अहमदाबाद: इनफ्लिबनेट।